

उड़ीसा में चावल (2010 खरीफ) के प्रमुख कीट के प्रबंधन के लिए जागरूकता व निगरानी कार्यक्रम

धान उड़ीसा के किसानों की जीविका का एक मुख्य स्रोत है. राज्य में औसत वार्षिक वर्षा का स्तर १४५१ मिली मीटर है जिसमें से ९४० मिली मीटर वर्षा जुलाई से सितम्बर माह में होती है. इस अवधि में बरसाती दिनों की संख्या ४२ तक पहुँच जाती है. वर्षा का वितरण असमान एवं अनियमित है. अधिकाँश किसान विविध परिसर रिस्कप्रों समूह से संबध रखते हैं. चावल यहाँ की मुख्य फसल है, जिसका क्षेत्र ४१.१८ लाख हेक्टेयर है जो की खेती के कुल क्षेत्र का ६६% है. यहाँ खरीफ खेती की मुख्य अवधि है. खरीफ के दौरान नमी वाली चावल की फसल दो मुख्य कीटों से प्रभावित थी, स्वार्मिंग कटरपिल्लर (स्पोदोसेरा मौरिशिया) अगस्त से सितम्बर की अवधि में व ब्राउन प्लांट होपर (निलापर्वता लुगेंस) अक्टूबर से नवम्बर की अवधि में. १.६५ लाख हेक्टेयर क्षेत्र गंभीर रूप व २.५ लाख हेक्टेयर क्षेत्र सामान्य रूप से प्रभावित था.

मौसम सम्बन्धी कारकों अर्थात जून २००९ में मानसून में लगभग दो सप्ताह की देरी और मध्य खरीफ और अगस्त २००९ में १०-१५ दिन की सूखे की स्थिति से बयूसनिंग प्रसारण प्रणाली के तहत गैर सिंचित, कम अवधि की नमी वाली धान भूमि को काफी प्रभावित किया. प्रतिकूल मौसम स्थितियों के कारण संबलपुर, सुंदरगढ़, झारसुगुडा, नुँपारागैर, सोनेपुर, देओगढ़, नवरंगपुर और मलकानगिरी जिलों के सिंचित क्षेत्रों में स्वर्मिंग केटरपिल्लर पर्यक्रमण के फैलने के लिए उचित स्थिति बना गयी व पूरी, नवरंगपुर, कोरापुट, खुर्दा और कटक जिलों में ब्राउन प्लांट होपर का प्रभाव देखने को मिला.

सर्वेक्षण के दौरान, देर से बोई जाने वाली चावल और तराई चावल के खेतों में स्वार्मिंग केटरपिल्लर के कारण काफी क्षति देखने को मिली. लार्वा संख्या घनत्व (LPD) अप्लैंड क्षेत्रों की अपेक्षा तराई क्षेत्रों में अधिक था. ध्यान से देखने पर धान के पौधों पर लार्वों के भक्षण का खुलासा हुआ. कुछ किसानों ने दुबारा बोया लेकिन परिणाम उत्साहजनक नहीं थे.

प्रभावित क्षेत्रों में किसान कीट की स्थिति से निपटने के लिए कीटनाशकों व कीटनाशक छिड़काव कर रहे थे. इन सभी संरक्षित कारवाई अपनाने के बावजूद भी किसानों को फसल में काफी नुकसान उठाना पड़ा. स्पोदोसेरा लिट्यूरा के हमले के अतिरिक्त एक और औदरिक संभरक, विविध प्रकृति का कीट देखने को मिला. विभिन्न फसल प्रणालियों में कीटों की वजह से हुई महामारी व फसल का विनाश सामान्य लक्षण है. धान में इन कीटों के कारण चक्रीय संक्रमण एक नियमित घटना है.

२००७-२००९ में खरीफ के दौरान उड़ीसा में धान की आद्र भूमि में दो कीटों स्वार्मिंग केटरपिल्लर , ब्राउन प्लांट होप्पेर एंड शीथ ब्लाइट रोग का विनाशक प्रकोप देखने को मिला. कीट भी तदानुसार स्थानांतरित हो गए उड़ीसा के संबलपुर, बारागढ़, झारसुगुडा , देओगढ़ , सुंदरगढ़, कोरापुट, कालाहांडी, नवरंगपुर, और केओन्झार जिलों में धान और दलहन फसलों में सोप्टोमेरा लिट्यूरा, हेलिकोवेर्पा अर्मिजेरा और पत्ती खाने वाले केटरपिल्लर का महामारक परिदृश्य देखने को मिला.

उड़ीसा के अविभाजित जिलों अर्थात सम्बालपुर, सुंदरगढ़, कोरापुट, कालाहांडी और बलांगीर में धान की फसल में कीटों की निगरानी व प्रबंधन को मजबूत करने के लिए एक गहन कीट निगरानी तंत्र और सलाहकार/ जागरूकता तंत्र की स्थापना की जरूरत थी ताकि स्वार्मिंग केटर पिल्लर के स्थानीय क्षेत्रों में इस स्थिति से निपटा जा सके. इसे ध्यान में रखते हुए उड़ीसा के १३ जिलों में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान योजना के तहत " धान आधारित फसल प्रणाली में कीट निगरानी एवं प्रबंधन कार्यक्रम " अनुमोदित किया गया.

परियोजना के उद्देश्य

- कीटों व रोगों के प्रभाव की निगरानी
- धान में कीट प्रबंधन के लिए उपयुक्त उपायों का सुझाव
- कीटों व रोगों के विनाशकारी प्रभाव के कारण फसल में होने वाली हानि से बचाव
- कीटों व रोगों के लिए पूर्वचेतावनी व प्रबंधन तंत्र का विकास
- प्रभावित क्षेत्रों के लिए पादप संरक्षण नीतियों का सुझाव
- लोकप्रिय माँस मीडिया के माध्यम से जन जागरूकता पैदा करना

कार्य क्षेत्र

परियोजना का संचालन क्षेत्र १३ जिलों संबलपुर, बारागढ़, झारसुगुडा, देओगढ़, सुंदरगढ़, कोरापुट, नवरंगपुर, रायगड , मलकानगिरी, कालाहांडी, नवापारा, बलांगीर, और सोनेपुर होंगे. इस कार्यक्रम में अधिक जोर धान व दलहन फसलों पर दिया जायेगा, क्योंकि ये स्पोटोमेरा लिट्यूरा व हेलिकोवेर्पा आर्मिजेरा के लिए प्राकृतिक मेजबान हैं.

परियोजना की विस्तृत जानकारी के लिए लाग ऑन करें

<http://www.ncipm.org.in/Orissa2010/orissastartpage.aspx>